साधारण धर्म

साधारण धर्म :- यह सभी के द्वारा अनुसरण करने योग्य धर्म है व्यक्ति चाहे किसी भी वर्ग का हो, स्त्री हो, या पुरुष, राजा हो या प्रजा, सबको सामान्य धर्म का आचरण करना चाहिए। याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार विज्ञानेश्वर के अनुसार अहिंसा आदि सामान्य धर्म का आचरण पुरे से पुरे व्यक्तियों के लिए आवश्यक है। अतः सामान्य धर्म ही मानव धर्म है।

शत्रुविहीनता, सत्य, और अक्रोध - ये तीन सर्वश्रेष्ठ गुण हैं। महात्मा मनु का कहना है कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच इन्द्रिय-निग्रह आदि सभी के वर्णों के धर्म है। सामान्य धर्म सभी लोगों के लिए आचरणीय धर्म है। सामान्य धर्म का तात्पर्य मानव का सर्वतोमुखी विकास है। इन गुणों का पालन करने से सबका सभी समय कल्याण होगा। श्रीमद्भागवत (7/11/8-12) में बतलाया गया है कि देव-ऋषि नारद ने युधिष्ठिर को तीस गुणों का सामान्य धर्म बतलाया था। जो निम्नलिखित है।

सत्य, दया, तप शौच तितिक्षा (क्षमा) ईक्षा (उचित अनुचित का विचार) शम (मन को वश में रखना) दम (इन्द्रियों को वश में रखना) अहिंसा ब्रह्मचर्य त्याग (दान) स्वाध्याय (जप आदि), आर्जव, संतोष, समदृक, सेवा (साधुओं की सेवा) ग्राम्येहो परम (प्रवृत्तिमार्ग धर्म से निवृत्ति) विपर्ययेक्षा (निष्फल क्रियाओं को समझना) मौन (बेकार की बाते नही करना) आत्मविमर्शन (शरीर से अलग आत्म का ज्ञान) संविभाग (अपनी आवश्यकता से अधिक अन्न को प्राणियों में बाँट देना) सभी प्राणियों में अपनी आत्मा को देखना, परमेश्वर के गुणों का श्रवण, कीर्तन, परमेश्वर का स्मरण, परमेश्वर की सेवा, पूजा परमेश्वर के प्रणिपात, उसके प्रति दास्य भाव, परमेश्वर के प्रति मित्रता एवं उसके प्रति समर्पण - ये तीसों कर्म मनुष्य के लिए श्रेष्ठ धर्म है। जिनसे परमेश्वर सन्तुष्ट होते है।

Scanned with CamScanner

महात्मा मनु ने धर्म के अनुसार दस लक्षण का वर्णन किया है। धृति, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध ये दस लक्षण हैं। इन दस लक्षण को प्रायः सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। इनकी व्याख्या इस प्रकार है।

(1) **धृति :-** आपत्ति काल में भी धर्म को न छोड़ना धृति या धैर्य है। धैर्यवान व्यक्ति विचलित नहीं होता, अर्थात वह धैर्य धारण का धर्म के पक्ष से अलग नहीं होता। अतः धैर्य व्यक्तित्व की महानता का द्योतक है। जिसे धैर्य नहीं वह धर्म का पालन नहीं कर सकता। धैर्य से ही व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु धैर्य वही व्यक्ति धारण कर सकता है जो इन्द्रियों और मन का नियंत्रण करे। इसलिए महात्मा विदुर का कहना है कि विषयों में आसक्त मन को धैर्य के बिना नियंत्रित नहीं किया जा सकता। अतः मन को नियंत्रण करने वाली वृत्ति ही धृति कहलाती है। धृति भी तीन प्रकार की होती है — सात्विक, राजसिक और तामसिक। इस तीनों का वर्णन भी गीता में किया गया है।

(2) **क्षमा :-** क्रोध को सहना ही क्षमा है। इसके कारण ही व्यक्ति निन्दा, अनादर, आदि दोषों को सह जाता है। इसका महत्व बतलाते हुए बृहस्पति स्मृति में कहा गया है कि बाह्य या आन्तरिक दुःख उत्पन्न होने पर भी क्रोध या हिंसा न करने का नाम क्षमा है। इसी प्रकार देवल स्मृति में कहा है कि क्रोध से दूसरे के द्वारा की गई निन्दा, अनादर, जैसे वध आदि दोषों को सहना ही क्षमा है। क्षमा की महिमा शास्त्रों में अनेक प्रकार से गायी गयी है। इसे महादान माना गया है।

(3) दम :— मन का नियंत्रण ही दम है। मन स्वभावतः बुरे विषयों की ओर आकर्षित होता है। अतः इसका बुरे विषयों से निवारण करना दम है। मन सभी इन्द्रियों का स्वामी है। मन जिस ओर जाता है इन्द्रिय भी उसी ओर जाती है। अतः मन की गति का नियंत्रण करने से सभी इन्द्रियों का गति का नियंत्रण हो जाता है। इसलिए तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है कि ब्रह्मचर्यादि के सभी धर्मों का मूल दम ही है। ब्रह्मचारी दम से ही नियंत्रण करता है तथा अपने पापों का नाश करता है।

(4) अस्तेय :—
चोरी न करना ही अस्तेय है। किसी की कोई चीज बिना अनुमति लेना ही स्तेय है। अतः अस्तेय दूसरे की वस्तु का अनावश्यक अपहरण है। लोभ के कारण ही व्यक्ति पराई वस्तु का अपहरण करता है इसलिए लोभ को स्तेय (चोरी) का कारण माना गया है। अतः अलोभी व्यक्ति ही अस्तेय का आचरण कर सकता है। लोभ के कारण ही व्यक्ति दूसरे के धन का अपहरण करता है। अतः इसका त्याग ही अस्तेय है।

(5) शौच :—
शौच पवित्रता है। शौच दो प्रकार का होता है, बाह्य और आन्तरिक। शरीर को जल-स्नान आदि से शुद्ध करना बाह्य शौच है। मन के मल को दूर करना आन्तरिक शौच है। दोनों प्रकार के शौच की आवश्यकता है परन्तु आंतरिक शौच बाह्य शौच की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। स्नान आदि से पवित्र होकर भी मनुष्य मन के मैल के कारण अपवित्र ही बना रहता है। इसलिए महात्मा मनु का कहना है कि सभी पवित्रताओं में मन की पवित्रता श्रेष्ठतम है। क्योंकि मन

को दूषित करने में चोरी का बड़ा योगदान है। चोरी के कारण ही लोभ और मोह उत्पन्न होता है जिससे व्यक्ति के मन में दूसरे का अर्थ या धन लेने का विचार मन में आता है तो वह कभी भी आन्तरिक रूप से पवित्र नहीं कहा जा सकता। अतः आन्तरिक पवित्रता के लिए दूसरे के धन का लोभ सर्वथा त्याज्य है।

(6) इन्द्रिय निग्रह :—
इन्द्रियाँ एकादश हैं। इन्द्रियों पर नियंत्रण ही इन्द्रिय-निग्रह है। एकादश इन्द्रियाँ हैं – पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय और एक मन। ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा। इनसे हमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द का ज्ञान होता है। पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं – हस्त, पाद, मुख, पायु और उपस्थ। एकादश इन्द्रिय मन है। मन का दमन दम कहलाता है। अन्य सभी इन्द्रियों का नियंत्रण ही इन्द्रिय निग्रह है।

(7) धी →
धी का अर्थ तत्वज्ञान है। तत्वद्रष्टा ही कर्तव्य और अकर्तव्य का निश्चय कर सकता है, परन्तु इस निश्चय के लिए विवेक की आवश्यकता है। विवेक के कारण ही मनुष्य दुष्कर्म का त्याग और सत्कर्म को ग्रहण करता है। विवेक के कारण ही हम शास्त्र विहित कर्म को करते हैं और शास्त्र निषिद्ध कर्म का त्याग करते हैं। इस प्रकार धार्मिक कृत्यों के लिए विवेक की आवश्यकता है। विवेक से ही व्यक्ति तत्व और अतत्व का निर्णय कर सकता है और सत्कर्म का आचरण कर सकता है। विवेक से ही मनुष्य असत् से सत् की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर जाने का निश्चय करता है।

विवेक से रहित व्यक्ति शान्ति और

को निश्चय करता है। विवेक से रहित व्यक्ति शान्ति और धर्म की मर्यादा को नहीं मानता।

8. विद्या :— विद्या का अर्थ — आत्म-ज्ञान है। अनात्म-ज्ञान सांसारिक ज्ञान है। अनात्म-ज्ञान से भिन्न है। इससे व्यक्ति केवल व्यवहार कुशल हो सकता है, परन्तु आत्म ज्ञान मोक्ष का साधन है, आत्मा ही एकमात्र तत्व है और इसका यथार्थ ज्ञान पाने वाला व्यक्ति अमर हो जाता है।

9. सत्य :— सत्य का आचरण ही धर्म का मूल है। उपनिषदों में सत्य की महिमा के विषय में कहा गया है कि सर्वदा सत्य बोलो, सत्य के प्रति विश्वास भी रखो, सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। ज्ञानी व्यक्ति सत्य से ही परमेश्वर को प्राप्त करता है [illegible] होगा। [illegible] के शरीर में सत्य का ही प्रकाश संन्यासी देखते हैं।

10. अक्रोध :— क्रोध का कारण होने पर भी मन में क्रोध न आना ही अक्रोध है। इस प्रकार अक्रोध का पालन वही कर सकता है जो इन्द्रिय-संयम करता है तथा मन का दमन करता है। साधारण व्यक्ति क्रोध का कारण उत्पन्न होने पर क्रोधित हो जाते हैं तथा प्रशंसा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं। परन्तु महात्मा के लिए प्रशंसा और निंदा समान है। ज्ञानी व्यक्ति अपने मन, काम, क्रोध पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। धार्मिक आचरण के लिए काम के समान क्रोध पर भी विजय पाना आवश्यक है।

इस प्रकार मनु-स्मृति के समान ही याज्ञवल्क्य-स्मृति में भी दस नियम और दस यम बतलाए गए हैं। अतः सनातन धर्म या मानव धर्म के नियम प्रायः सभी में समान रूप से माना है।

Scanned with CamScanner